पूरा गुरु क्या शिक्षा देता है ?

(सत्संदेश अक्तूबर 1961 में प्रकाशित प्रवचन)

स्वामी जी की टाक (प्रवचन) आप ने सुनी है। उसका तात्पर्य आखिर क्या निकलता है ? कि जब कोई पूर्ण महात्मा मिल जाए आप अपना हृदय खाली करके उसके सामने रख दो और बाकी अपने आप सारा काम होगा। आप को पता है कि जब आप को उपदेश दिया जाता है तो यही कहा जाता है कि भाई निश्चिन्त हो कर बैठ जाओ, अंतर से सारे हृदय को खाली कर दो। बाकी वह अपने आप काम करता है। गुरवाणी में आता है:

सेव ना मिलेयो, घाल ना मिलेयो
मिलेयो आए अचिन्ता॥

वह सेवने से, घालने से नहीं मिलता है। जब आप अचिन्त हालत में हो उस वक्त वह अपने आप आ जाता है। आप देखिये, दरवाज़े में आप खड़े हों, आप बुला रहे हो, आओ, भाई आओ, मित्र आओ, मेरे दोस्त आप अन्दर आ जाओ। आप दरवाज़ा ही छोड़ते नहीं, कैसे अंतर में आये ? इसका मतलब यह है कि प्रेम और प्यार से दरवाज़े पर बैठ जाओ। बाकी आप किनारे हो जाओ, उसके हवाले कर दो। बाकी सारा काम उसी का है। कहते हैं मैंने हृदय खाली करके पेश किया, उसमें वह बैठ गए। अब जब भी मैं देखता हूं, उसी को देखता हूं। पहले पहाड़ों से इन की (स्वामी जी की) एक चिट्ठी आई थी कि मैं चौदह या पन्द्रह हजार फुट की बुलन्दी (ऊँचाई) पर बर्फों में खड़ा हूँ। इन को पहले विश्वास नहीं था कि गुरु हमारे अंतर में प्रकट होता है। बार बार इनको समझाते थे, फिर

भी नहीं मानते थे। तो इन्होंने मुझे यह चिट्ठी लिखी कि मैं इस वक्त पन्द्रह हज़ार फुट की बुलन्दी पर बर्फों पर खड़ा हूं और मैं यह देख रहा हूं कि मेरा गुरु मेरे सामने खड़ा है। कहते हैं अब मैं convinced (यकीन) हूँ। तो ऐसे ही, जैसे मुझे मिले हैं, कहते हैं आप लोगों को भी मिल सकते हैं। हृदय खाली करो। हृदय खाली कैसे हो ? कि सिवाय उसके कोई न रहे । जो हृदय खाली होगा वह भरा जाएगा। जो आगे ही प्याला भरा पड़ा है उस में आगे और क्या पड़ सकता है ? Receptive (ग्रहणकर्ता) बनो। देखो, सुराही के नीचे जो प्याला होगा वह भर जाएगा। जो सुराही के ऊपर होगा वह खाली रह जाएगा। खैर कल शाम, आज सुबह आपके सामने मज़मून रखा गया था हजूर की life (जीवन) पर थोड़ी थोड़ी touches (विचार) देकर कि सत्संगी हम कैसे बन सकते हैं? हम सत्संगी बनने के लिए महापुरुषों के पास जाते हैं। वे सच्चे मायनों में सत् का संग कर रहे हैं, वह mouthpiece of God (प्रभु मुख) बन गए। समझे।

हम उस सत् को पाने के लिए उनके पास जाते हैं। जब उनके पास जाते हैं तो हम कहते हैं कि हमें थोड़ा सत् का संग दे दो, Contact (संपर्क) दे दो। कैसे उसका contact होता है। किसको होता है ? आत्मा को। इस वक्त हमारी क्या गति है? हम आत्मा देहधारी हैं। सब की आत्मा मन के अधीन है । मन आगे इंद्रियों के अधीन है, इंद्रियों को आगे भोग खींच रहे हैं। यह जिस्म का रूप बना बैठा है। जिस्म और इसके ताल्लुकात की ही सत्संग कर रहा है। अब उस सत् के संग के लिये असत से हटें, तब सत के संग को पाएं। तो इसलिये महापुरुष मिलते हैं तो वह आप को सत् के संग की थोड़ी पूंजी दे देते हैं। सत् क्या है? वह परमात्मा। बाकी सब असत् है। जगत असत् है और आत्मा सत् है। आत्मा सत् क्यों है? यह एक consciousness (चेतनता) की बनी हुई है। Consciousness इसलिए जो एक चीज़ से बनी हुई है वह define (परिभाषित) नहीं होती। वह अजर और अमर है, हमेशा रहने वाली। वह unchangeable Permanence है, लातगय्यर, लातबद्दल (न बदलने वाली)। जितना जगत और जिस्म है, सारा ही मैटर के बने हुए

हैं। यह है combination of elements. Elements (तत्व) आगे atoms (ऐटमों) के बने हुए हैं। इस लिए जिस्म तो change (परिवर्तन में) होगा। तो यह सत् का संग पाने के लिए मनुष्य जीवन सबसे उत्तम योनी है, highest rung in creation है। मनुष्य जीवन ही में आकर तुम उस सत् के संग को पा सकते हो।

उसको, सत् के संग को पाने के लिए हमें क्या करना होगा? कल आपके सामने detail (खोल कर) में रखा गया था, सत्संगी कैसे बन सकते हैं? पहले ज़मानों में ज़िक्र किया जाता है कि तैयार करके दस-दस बारह बारह साल, कई कई साल बर्तन बना कर फिर डाला करते थे। आजकल घोर कलियुग है। संत कहते हैं, भाई अब न वे ज़माने रहे न वह हालात रहे। अरे भाई वे क्या कहते हैं? School (स्कूल) में दाखिल कर लेते हैं और दोनों काम अपने सिर लेते हैं। एक तो बनाने का, दूसरा सत् के संग को पाने का। पूंजी पहले दिन दे देते हैं। पूंजी क्या है कि परमात्मा ज्योति स्वरूप है। वह परमात्मा अनहद की ध्वनि कहो, उद्गीत कहो, नाद कहो, light and sound principle है। उसकी थोड़ी पूंजी दे देते हैं। वह किस चीज़ का इज़हार है? उसे शब्द कहो, परमात्मा इज़हार में आई ताकत कहो, उसका contact (संपर्क) है। वह अव्वल है। सारी सृष्टि का आगाज (शुरुआत) उसी से हुआ है। अब भी उसी के आधार पर चल रही है। अंत में, आखिर क्या होगा? वही शब्द ही महाप्रलय के बाद बाकी रह जाएगा।

उतपत परलै सबदे होवे॥
सबदे ही फिर ओपत होवे॥

उत्पत्ति और प्रलय जिस ताकत के आधार पर होती है, जिस ताकत के आधार पर प्रलय हो कर दोबारा नए सिरे से फिर सृष्टि का आगाज़ होता है उसका नाम है शब्द, God into expression power. शुरू दुनिया का उसीसे हुआ। अब भी उसी के आधार पर चल रही है। आखिर रह क्या जाएगा?

वही शब्द। शब्द के दो expressions (प्रकट करना) हैं। एक है अशब्द जो अभी इज़हार में नहीं आया था। उसके पहुंचने के लिए there is an expression power ज्योति का विकास और ध्वनि ये दो चीज़ें हैं। जिसकी आत्मा मनुष्य जीवन पाकर उस के साथ लग कर शब्द-निष्ट, शब्द-श्रोत्री हो गई उसको न प्रलय है न महाप्रलय। स्वामी जी ने थोड़ा hint (इशारा) दिया था कि शुरू उसी से हुआ सिलसिला। अब भी मनुष्य जीवन पा कर महात्मा हमें उसी के साथ जोड़ते हैं। यह कोई मामूली बात नहीं। सब कोई यह चीज़ नहीं दे सकता है। यह भाग्य से मिलता है। मैंने आज सुबह आपको ज़िक्र किया था कि तीन कृपा चाहिये। पहली कृपा उस प्रभु की। जिस जीव को मिलाना चाहे, जब वह कृपा करता है तो फिर किसी मिले हुए को मिला देता है। वह क्या करता है? जिस के अंतर वह contact (संपर्क) कर रहा है, जो mouthpiece (मुख) बन रहा है, जो इंसान उसके साथ जुड़ता है वह उसको उसी के साथ जोड़ देता है। तो नाम का मिलना कोई मामूली बात नहीं है जो हमने बड़ी मामूली बात कही चलो नाम ले लो। खत्म हो गया। अरे भाई नाम ले कर पहले ही खत्म नहीं हो गया। अभी क, ख, शुरू हुई है आप की। वह कहां से शुरू होती है? जब आप अदृष्ट और अगोचर से लगते हो, पिंड से, इंद्रियों के घाट से आप ऊपर जाते हो।

एवड ऊचा होवे को। तिस ऊचे को जाणे सो॥

तो पहले तो किसी महापुरुष का मिलना, यह उसकी बरकत है। फिर, उसकी कृपा करके हमको कुछ पूंजी दे देना। किस की? नाम की या शब्द की, जो प्रभु ज्योति स्वरूप का इज़हार है। उसमें और फिर शब्द की ध्वनि हो रही है। उसका परिचय दे देने से जो आत्मा मन-इंद्रियों से आज़ाद हो कर उसमें लय होने लग गई, आखिर ध्वनि जो आ रही है कहां खत्म होगी? फिर उसी शब्द और लाईट principle में। शब्द से फिर अशब्द में लय हो सकती है। उसी के आधार पर सृष्टि का आगाज़ हो सकता है। यह ज़रा समझने वाली बात

है। नाम का मिलना कोई मामूली नहीं है। यह हर किसी को नहीं मिलता है।

धुर कर्म पाया तुध जिन को, से नाम हर के लागे॥
कहो नानक तहं सुख होवा तित घर अनहद बाजे॥

जिस को धुर से आप दया करे। और वह कहां से मिलता है? बड़े प्यार से समझाया है कि जिस को तू आप दया करे उसको मिलता है। कहते हैं:

जहां नाम मिले तहं जाओ॥

और:

नाम जपत कोट सूर उजेयारा॥

नाम जपते हुए करोड़ों सूरजों का प्रकाश होता है। फिर कहा है, राम नाम कीर्तन हो रहा है।

धुन उपजै सबद निसान

Light and Sound principle, ज्योति का विकास, ज्योति मार्ग और श्रुति मार्ग, that is the way back to God (प्रभु के पास वापस जाने का रास्ता है)। कहाँ से इस की क, ख, शुरू होती है? जब आप इंद्रियों के घाट से ऊपर आओ। इंद्रियों के घाट से ऊपर कैसे आ सकते हो? इस के लिए जो आते हैं वह आप को way up (ऊपर उठायेंगे) कराऐंगे।

खैंचे सुरत गुरु बलवान

उधर की थोड़ी पूंजी दे देने से, उस का रोज़ रोज़ अभ्यास करने से तुम शब्द निष्ट और शब्द श्रोत्री हो जाओगे, तुम्हें प्रलय और महाप्रलय का कोई डर नहीं रहेगा। तो नाम का मिलना कोई मामूली बात नहीं है। यह (स्वामी जी) अपना अनुभव बयान कर रहे थे कि मैंने तलाश करते रहना, फिरते रहना, मंदिरों में फिरते रहना, पहाड़ों की चोटियों पर गए, बर्फानी गुफाओं में, दरिया के तटों पर गए मगर मिला नहीं। चीज़ कब मिली? सत्संग में। वहां कलकत्ते में मिले। आखिर जोइन्दा याबिंदा। तो आखिर चीज़ मिली। तो आखिर उन्होंने समझाया

है कि तुम भाग्य वाले हो, पूंजी तो तुम को मिल गई, पूंजी को पा कर न करना निहायत बदकिस्मती है। जिन को यह चीज़ अभी नहीं मिली- अरे भाई इस चीज़ के देने वाले भी कहीं कहीं मिलेंगे। बहुत कमयाब हैं। जितने ज्यादा हों, खुशी की बात है मगर ऐसे महापुरुष कम मिलते हैं, कमयाब हैं। इस लिए कहा, ''जहां नाम मिले तहां जाओ।'' फिर कहा, कहाँ से लें? कहते हैं, जहां से यह चीज़ मिल सकती है, ले लो। फिर कहते हैं, कैसे मिलेगी? फरमाते हैं:

गुर प्रसादी कर्म कमाओ॥

गुरु कृपा से। मगर ऐसे गुरु कमयाब (बिरले) आगे भी थे, अब भी कमयाब हैं। तो बड़े भाग्य से यह पूंजी मिलती है जिस की हम कद्र नहीं कर रहे हैं। आप को यह चीज़ मिल चुकी है और मिल चुकने पर भी उस की कद्र नहीं कर रहे क्योंकि उसका अभ्यास हम नहीं कर रहे। अरे भाई अपने जीवन का वह पथ है, आधार है। जिस के पास वह पूंजी होगी उसको प्रलय महाप्रलय से क्या डर है? मुझे अमेरिका से एक चिट्ठी आई कि अमेरिका सब under water (पानी में डूबा) हो जाएगा, हम क्या करेंगे? तो मैंने उनको लिखा है भाई तुम को नाम मिल चुका है। तुम उसके साथ हो। वह तुम्हारे साथ है। आखिर नाम में ही हमने, नाम-निष्ट और शब्द-निष्ट एक ही बात है। शब्द श्रोत्री और शब्द निष्ट कहो, जिसको ये चीज़ें मिल गईं उसको आखिर दुनिया की जो कहते हैं प्रलय महाप्रलय होगी, अरे भाई उसी में इज़हार की ताकत है न। वही सब का आधार है। उसकी आपको महापुरुष पहले दिन थोड़ी सी पूंजी दे देते हैं, वह बड़ी भारी बरकत है। मगर बड़ा भारी अफसोस है कि हम कद्र नहीं करते हैं। यह पूंजी बड़े भाग्य से मिलती है। तो कल आप के सामने यह सब रखा कि सत्संगी, सत् के संग करने के लिए हम समाजों में दाखिल हुए थे, सत् के संग करने के लिए हम महापुरुषों के चरणों में गए। जिन को सत् का संग आप ही नसीब नहीं है वह आप को कहां से देंगे? यह लेक्चर बाजी का मज़मून (विषय) नहीं है, ग्रंथ कारों का मजमून नहीं। यह चातुरों का मजमून नहीं है। यह जो अनुभवी पुरुष है, mouthpiece of God बने हैं:

जैसे में आवे खसम की बाणी तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो॥

तो ऐसे पुरुष के पास बैठने से आपको पहले दिन ही यह पूंजी मिल जाती है। यह बड़े भाग्य से मिलती है।

जे वडभाग होवे वडभागी तां हर हर नाम धियाई॥

बड़े भाग्य हों। मनुष्य जीवन आपको भाग्य से मिला है, और बड़े भाग्य हों तो राम को ध्याने वाला बने, शब्द-श्रोत्री और शब्द-निष्ट बने मगर यह चीज़ न मिले तो कैसे हो? पूंजी कब मिलती है? जब इंद्रियों के घाट से आप ऊपर आओ। यह बुद्धि का मज़मून नहीं है। यह practical (अनुभव का) मज़मून है। जो खुद इंद्रियों के घाट से ऊपर जाता है, आपको उसकी थोड़ी सी पूंजी दे देता है उसी नाम की जिसके आधार पर सारी दृष्टि चल रही है, जिसमें आखिर लय होगी। कितनी बड़ी भारी खुशकिस्मती है नाम का मिलना। जिनको मिल चुका है उनके लिए कल मैंने अर्ज किया था कि उन्हें सत्संगी बनना है। समझे? आज सुबह यह था कि महापुरुषों की, सब की एक ही findings (खोज) है, मुख्तलिफ महापुरुषों के उदाहरण दे कर। तो दुनिया में दो किस्म के महापुरुष आते हैं, थोड़े लफ्जों में। एक तो वह महापुरुष हैं, जैसे मैंने ज़िक्र किया था कि कैदखाने में सुपरिटेंडेंट जेल भी जाता है और डाक्टर भी जाता है और कैदी भी जाते हैं। कैदी तो सजा भुगतने के लिए जाते हैं और सुपरिटेंडेंट वगैरा जो हैं, वह जाते हैं कि कोई भाग तो नहीं गया? कोई दरवाजा तो नहीं टूट गया? कहीं खलल तो नहीं मच गया, कहीं आपस में लड़ाई तो नहीं हुई है? उसको सैट करने के लिए जाते हैं। दूसरा जाता है, डाक्टर। वह देखता है यह लाचार, बीमार है। वह चिट लिखता है कि इसको भेज दो, बाहर चलो। तो अनुभवी पुरुष भी दुनिया में आते हैं। उनका यह काम है । अवतार भी दुनिया में आते हैं और संत जन भी आते हैं। अवतारों का काम है, वह खुद बयान करते हैं कि जब जब धर्म की ग्लानि होती है तो मैं अवतार धारण करता हूं, अधर्मियों को दंड देने के लिये, धर्मियों को उभारने के लिये, दुनिया की स्थिति को कायम रखने के लिये, यह उनका काम

है। ठीक है। अवतारों का यह अपना काम है और संतों का अपना portfolio (विभाग) है। उनके पास क्या portfolio है?

तुरत मिलावें राम से उन्हें मिले जो कोय।

कोई भी उनके पास जाए, भाव भक्ति से जाए, कि महाराज दया करो, वह कहते हैं आओ भाई चलो। क्या देते हैं? कुछ पूंजी नाम की, जो सब सृष्टि का आधार है उसके साथ contact (संपर्क) दे देते हैं। Life से life (जीवन) देते हैं। फिर उसको develop (बढ़ा कर) करते आखिर उसमें शब्द निष्ट और शब्द श्रोत्री हो जाए, "गुरुमुख आए जाय निसंक।" बात समझे आप? तो हमारे हजूर इस श्रेणी के महापुरुष थे। अवतार लोग भी संतों की कद्र करते हैं याद रखो।

राम कृष्ण ते को बड़ो तिन भी तो गुरु कीन।

भगवान राम और भगवान कृष्ण से कौन बड़ा होगा? उन्होंने भी तो आखिर गुरु धारण किया है। फिर "तीन लोक के नायका गुरु आगे आधीन।" त्रिलोकीनाथ होते हुए भी गुरु के आगे सिर नीचा रहा है। बात समझे?

तो संतों का अपना portfolio, जैसे दुनिया में होता है कि नहीं, अपना अपना portfolio है किसी का law (कानून) का है, किसी का foreign affairs (विदेशी मामले) का है, किसी का कोई है। अपने अपने department (विभाग) की उन्हें फुल्ल अथौरिटी है, इसी तरह प्रभु की दरगाह में भी portfolio होते हैं। अवतारों का अपना portfolio है। समझे। मगर दोनों के बयान में फर्क रहता है। एक कमांडर इन-चीफ (प्रधान सेनापति) है। एक वायसराय है। दोनों ही ताकत लेते हैं बादशाह से मगर तर्जेबयान और रहनी, अपना अपना अलेहदा अलेहदा function (काम) है। कमांडर इन-चीफ हमेशा कहता है, I order, fire, मैं हुक्म देता हूं कि गोली चला दो। यह कभी नहीं कहता कि बादशाह से मुझे ताकत मिली है, उसी के आधार पर मैं कह रहा हूँ। इशारा दे दिया कि मेरे उस निज रूप का ख्याल करो। वायसराय कभी नहीं कहता कि मैं कहता हूं। वह कहता है कि I convey the order of the king, मैं बादशाह

का हुक्म तुम को पहुंचा रहा हूं। तो यह है फर्क दोनों का। दोनों ही अपने अपने दायरे के मालिक हैं। अवतारों के सिलसिले में कैप्टन, मेजर, ब्रिगेडियर वगैरह तो बन जाते हैं, पैंशने मिलती हैं, सब कुछ होता है मगर एक बात यह है कि वह अपने दायरे से किसी को बाहर नहीं जाने देता है। अपने दायरे के ही अंतर इनामात जायदादें देंगे, वे सब कुछ देंगे मगर अपनी कैद से आजाद नहीं करेंगे। संतों का काम क्या है? जो भी उनके पास आ जाए:

तुरत मिलावें नाम से उन्हें मिले जो कोय॥

यह है फर्क महापुरुष का, अवतार भी संतों की कद्र करते हैं। भगवान कृष्ण जी के मुतल्लिक ज़िक्र आता है कि एक बार उनके गुरु आए। उन्होंने कहा भाई देखो, काफ़ी लम्बे चौड़े किस्से के बाद, मैं थोड़े लफ्जों में बयान करूं जो पढ़ी गई कि उन्होंने कहा भाई हमारा चित्त करता है कि बड़ा सुंदर रथ हो, ऐसा रथ हो जो बहुत ही खूबसूरत हो, बड़ा कीमती हो, उसके आगे घोड़ों की जगह तुम और रुकमणी दोनों लगे हों। गुरु भक्त थे। खैर बड़ा लंबा चौड़ा किस्सा है कि खाने बनवा कर दरिया में बहा दिये। खैर आखिर रुकमणी के पास गए कि भाई आज हमारा इम्तिहान है, जो कुछ भी हो चलो। दोनों को घोड़ों की जगह लगा दिया। खूब चाबुकें लगाई होंगी। यह इतिहास में ज़िक्र आया है यह बतलाने के लिए कि वह कितने गुरु भक्त थे।

हर सच्चा गुरु भक्ति पाईये, सहजे मन्त्र वसावणेयां॥

हरि सच्चा गुरु भक्ति से मिलता है। सहज में तुम्हारे अंतर में परमात्मा प्रकट हो जाता है, उस का कारण कि वह God man है, God plus man, God in man, अगर तुम Guruman बन जाओ तो God आ गया कि नहीं तुम्हारे अंतर? इस लिए सब महापुरुषों ने गुरु भक्ति पर जोर दिया। अव्वल तो गुरु का मिलना बड़े भाग्य से है। अगर गुरु मिल जाए तो वह हम को थोड़ी नाम की पूंजी दे दे, यह कोई आम चीज़ नहीं है। इसके दाता कहीं कहीं मिलते हैं। आगे भी कहीं कहीं थे, अब भी कहीं कहीं हैं। अगर मिल जाए, तुम को

पूंजी भी दे दे, उस अनमोल रत्न की जो सब का जीवनाधार है:

नानक नावें के सब किछ बस है, पूरे भाग कोई पाए॥

अगर वह मिल जाए फिर जो यह शिष्य आत्म कृपा न करे तो प्रभु कृपा और गुरु कृपा दोनों ही फल नहीं सकते। इस में कोई शक नहीं कि जो वह बीज बीज देते हैं वह कभी नाश नहीं हो सकता:

को ऐसो समरथ जो जारे इस बीज को।

कौन ऐसा पुरुष है जो इस बीज को जला सकता है? हाँ, एक फायदा ज़रूर रहेगा कि भाई यह बीज मनुष्य जीवन से नीचे फलता नहीं है। तो इसलिए मनुष्य जीवन से नीचे नहीं जाओगे। मगर आना तो पड़ेगा न भाई। आने में कौन सा सुख है? उलटा लटकना पड़ेगा पेट में। बचपन से नाम परमात्मा, उस के अनेक नाम रखे गए समझाने बुझाने के लिए। तो मैं अर्ज कर रहा था कि महापुरुषों ने बयान किया है दो तरह से कि परमात्मा को न किसी ने देखा न सुना, और कुछ कहते हैं हमने देखा भी है।

नानक का पातशाह दिस्से ज़ाहिरा॥

Behold the Lord ! क्राईस्ट ने कहा। यही स्वामी विवेकानंद जी ने कहा। वह नास्तिक थे पहले। Challenge करते थे पहले कि कोई है ऐसा पुरुष जिस ने प्रभु को देखा है? तो रामकृष्ण परमहंस उन दिनों अनुभवी पुरुष थे, उनके पास गए। सवाल किया, Master ! have you seen God ? ऐ महात्मा, तूने प्रभु को देखा है? तो वह कहते हैं, हां बच्चा, मैं उस को देख रहा हूं जैसे मैं तुझे देख रहा हूं बल्कि इससे भी सफाई के साथ। अरे भाई वह देखता है, वह दिखा भी सकता है। वह तो देखता है और कौन देखते हैं? जो गुरमुख बनें।

सो गुरमुख वेखे नैनी।

गुरमुख कहते हैं, जो ऐसे अनुभवी पुरुष के सम्मुख बैठा हो जो सुरत को

मन इंद्रियों से आज़ाद करके, तन मन के पिंजरे से ऊपर जा सकता हो और तुम को way-up कर सकता हो। उस का नाम गुरु हे। आगे कहाँ तक वह पहुंचा है, वह अलहदा बात रही। तो जो गुरु बने वह किन आंखों से देखता है ? कहते हैं:

नानक से अखंडियां बे अन्न जिनों डिसिंडो मापिरी।

ऐ नानक, वह आंखें और हैं जिन से वह नज़र आता है समझे। हैं तो सही न। यही भगवान कृष्णजी ने फरमाया, "तुम मुझ को इन चमड़े की आँखों से नहीं देख सकते बल्कि उस दिव्य चक्षु से जो मैंने तुम को बख्शी है। दिव्य-चक्षु जिसको Latent eye, Third eye, Single eye कहते हैं। तो वह अंतर की आँख से देखा जा सकता है। वह आँख चमड़े की नहीं, कोई और आँख है। तो किन आँखों से देखते हैं, वह सवाल भी हो गया। जिस का जग जाये उस की गति, जिस का नहीं जगा, फिर आता है।

तो महापुरुष जब आप को मिल गए, परमात्मा ने दया की, महापुरुष मिला दिये। मिलना गुरु का बड़े भाग्य से होता है। गुरु, असल में दुनिया गलत मायनों में समझ रही है, गुरु उसी हस्ती का नाम है जो तुम को कुछ पूंजी दे सके, उस परिपूर्ण परमात्मा का contact (संपर्क) दे सके। कब? कैसे ? उस लैवल पर ले जाकर। इस वक्त तुम जिस्म का रूप बने बैठे हो। थोड़ी सी तवज्जो दे करके, way-up करके (इंद्रियों के घाट से ऊपर लाकर), थोड़ी पूंजी दे देता है। फिर दिनों दिन उसे बढ़ाओ। फिर वही जो God in man है न, वह तुम को अंतर में प्रकट कर दे उस को, वह नूरी स्वरूप है। वहाँ पहुँचने पर तुम सच्चे मायनों में सिख बनते हो। यह probationary period होता है पहले। जिसके हृदय की ज़मीन साफ होती है उस को अंतर में गुरु स्वरूप आ जाता है पहले दिन ही। जब थोड़े दिनों के अभ्यास के बाद अपने आप जाए तो वह गुरु है असल में। जो उस के साथ जुड़ जाए वह गुरु-सिख बन गया समझे। हां वह गाड पावर जिस इंसानी पोल पर प्रकट है, जो mouth-

piece of God (प्रभु का मुख) बना हुआ है, वह मिल जाए तो वह उस के साथ हो बैठता है और कभी छोड़ता नहीं। हाँ जिस्म छोड़ जाए मगर वह पावर कभी नहीं छोड़ेगी। अगर ऐसा समर्थ पुरुष मिल जाए फिर और किसी के पास जाने की ज़रूरत नहीं रहती है।

तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब यह था कि योग से प्रभु मिलता है। योग कई किस्म के हैं। आप कहेंगे, कई किस्म के योग हैं। हठ योग है, प्राण योग है, मानसिक योग है, ज्ञान योग है। कई किस्म के योग हैं। कौन सा योग संत बतलाते हैं? सवाल यह है। इन योगों में क्या क्या है? हरेक से हरेक चीज़ मिल सकती है?

भाई देखो इंसान के पाँच कोष हैं। ठंडे दिल से विचारिये। अन्नमय कोष, प्राण मय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष और आनंद मय कोष। पाँच हैं हमारे गिलाफ। एक तो अन्न का है, यह हमारा जिस्म। इस के अंतर प्राणों का है, उस के अंतर मन का है, फिर विज्ञान का है, बुद्धि का। उसके आगे फिर आनंदमय कोष हैं। अब जितने योग हैं, देखिए हठ योग है। इसका ताल्लुक अन्नमय कोष से है या प्राणमय कोष से है। इससे तुम्हारा जिस्म, तुम्हारी सेहत बनती है। हृष्ट-पुष्ट बन सकते हो। प्राण योग से प्राणों पर का काबू पाकर तुम आयु को बढ़ा सकते हो। प्राणों का ठीक इस्तेमाल करो। प्राणों के आधार पर तुम्हारे स्वास चल रहे हैं। अगर प्राण काबू हैं, स्वासों का ठीक संयम चल रहा है, तुम्हारी आयु लम्बी होगी। कुम्भक कर लो, आयु को लाखों वर्ष कर लो। तो प्राणयोग से आयु बढ़ेगी, तंदरुस्ती, जिस्मानी सेहत पाने के लिए हठ योग इन दोनों का करना होगा। मानसिक योग से मन पर काबू पाना है। आगे रह गया विज्ञान योग, ज्ञान का मार्ग। तो इन सबका ताल्लुक या तो अन्नमय कोष से है या प्राणमय कोष से या मनोमय कोष या विज्ञान मय कोष से है। आनंद मय कोष आखिरी पर्दा है। उस का direct (सीधा) ताल्लुक तुम्हारी आत्मा से है।

सो आप देखेंगे संतों ने कौन से योग को अख्तियार किया है। न वे कहते हैं कि हठ योग से जिस्मानी सेहत बना लो। प्राण का जहां तक सिलसिला है वहां तक तुम जा सकोगे। हमारे हजूर फरमाया करते थे कि साइकिल पक्की सड़क पर चलेगी। जब खेत आ जाएँगे बंजर तो फिर नहीं चल सकेगी। तो प्राणों का विकास कहो, कहाँ से? चिदाकाश से। वहाँ से आगे जा नहीं सकते। तो आगे रह गया बुद्धि का विकास, ज्ञान योग से। बुद्धि को सूक्ष्म करके जीव और ब्रह्म की एकता का समझना है। असल में यह भी as a matter of inference है (अर्थात् बुद्धि विचार द्वारा एक परिणाम पर पहुंचना) है। अभी आनंद नहीं। थोड़ी थोड़ी झलक बाज़ वक्त आ भी जाती है मगर वह काफी नहीं है। इन सब की इज्ज़त हमारे दिल में दर्जे बदर्जे है। संतों ने कौन से योग को माना है प्रसिद्ध करके ? इस के दो कारण हैं। एक तो यह कि पुराने ज़मानों में आयु लंबी थी। समझे। लेना लाख वर्ष कहते हैं सत्युग में थी। त्रेता में दस हजार साल थी, द्वापर में हजार साल थी। कलियुग में एक सौ साल। सौ साल भी कोई कोई जीता है। आजकल 50-60 साल ही जीते हैं। सौ साल से ज्यादा उम्र नहीं जीता है। कहते हैं वह योग आज कर नहीं सकते। इसलिए कहते हैं कि फर्ज़ करो आप प्राण योग, यह, वह करो भी, कुंभक करो, नीचे चक्रों से चढ़ो, यहाँ पर हो। अगर तुम दरमियानी मंज़िल पर बैठे हो, हमारे हजूर फरमाया करते थे कि एक मकान है। उस की पाँच मंज़िलें हैं। आप दरमियान में बैठे हो तो आप नीचे आ कर फिर ऊपर जाओ, तो क्या अच्छा हो कि वहीं से ऊपर चढ़ जाओ। पहली बात। तो नीचे चक्रों को तय करने के लिए संतों ने उनको eliminate कर दिया (छोड़ दिया) है। दूसरा प्राण योग के करने के लिए हठ योग की क्रियायें करनी होंगी, हृष्ठ-पुष्ट बनना चाहिए। इसलिए संतों ने कहा, "We are not hereditarily fit for these yogas (कि हम आजकल इनके काबिल नहीं रहे)"। तो इनको (प्राण योग आदि को) eliminate कर दिया (छोड़ दिया)। इंसान के अंतर दो ताकतें काम करती हैं। एक आत्मा, एक प्राण। प्राण अपना काम कर रहा है अब भी, आप को कोई पता नहीं,

गिज़ा हजम होती रहती है, स्वास चलते रहते हैं और इस के साथ खून दौरा करता रहता है। बाल उगते हैं, नाखून बढ़ते हैं, आप को कोई पता नहीं, automatic (अपने आप) हो रहा है। तो जो महसूस करने वाली शक्ति है उस को कहते हैं सुरत, आत्मा। तो उन्होंने (संतों ने) क्या किया कि प्राण-योगियों ने, योगी भी गए इस रास्ते मगर खास हद तक गए। उन्होंने (योगियों ने) छः चक्रों को तय कर के प्राणों और सुरत दोनों को समेटा है और दोनों को समेट कर रूह के मरकज (ठिकाने) पर आँखों के पीछे आए। आगे सहस्रार तक जा सके, आगे नहीं गए। योगी यहाँ तक जाते हैं। ब्रह्म गति वाले ब्रह्म में लीन होते हैं। उस में जाग उठते हैं मगर इस से आगे का पता नहीं रहता।

तो मुझे याद है, मैं लाहौर में था। वहाँ पर कई भाई आया करते थे। एक बार ऐसे ही बात चल पड़ी। कहने लगे, "भाई हम तो ब्रह्म के आगे कुछ नहीं मानते।" "भाई ब्रह्म के आगे पारब्रह्म का तो ज़िक्र है ही। महात्मा कहते हैं चौथा ब्रह्म भी है।" उसका ज्यादा detail (खोलकर) में बयान किया है। वे कहते हैं हमने देखा भी है। तो उन को मैंने कहा, "भाई ब्रह्म तक तो हम साथी हैं। वहाँ तक तो गले मिल के चलो। अगर आगे कुछ हुआ तो चल पड़ना, नहीं तो तुम्हारी मंजिले मकसूद तो पूरी हो गई।" तो संत जन जहाँ तक वे (योगी) गए हैं वहाँ के आगे का उपदेश देते हैं। यह भी Confirm (पक्का) करते हैं कि हम सब भी जा सकते हैं मगर जिस रास्ते वह (योगी) जाते हैं वहाँ हम नहीं जा सकते। फी जमाना हम काबिल नहीं रहे। तो इसलिए वे (संत) कौन सा योग सिखलाते हैं? गुरु अमरदास जी साहब फरमाते हैं:

कर्म होय सतगुरु मिलाये॥
सेवा सुरत सबद चित्त लाये॥

वह तुम को सुरत और शब्द की सेवा सिखलाता है। सुरत मार्ग। ज्ञान मार्ग का ताल्लुक as a matter of inference (बुद्धि विचार का विषय है)। यह inference का मजमून नहीं है, यह seeing का (देखने का) विषय

है, inference (विचार) का नहीं, न emotions (भावावेश) का है। It is a matter of seeing. बल्कि of becoming. (देखने का ही नहीं, बनने का विषय है)। तो becoming कैसे होगा? यह (आत्मा) उस महा चेतनता के समुद्र की बूंद है, a drop of the ocean of life.

कहो कबीर एह राम की अंश।

आत्मा चेतन स्वरूप है, अगर यह मन-इंद्रियों के घाट से liberate (आज़ाद) हो जाए, यह कतरा समुद्र में वासिल (लय) हो कर समुद्र का रूप बन जाए। यह becoming का सवाल है। और बाकी आप को खास खास stages तक पहुँचाते हैं। इसलिए कहते हैं, मालिक दया करे, कोई सतस्वरूप हस्ती मिला दे, वह कौन सा योग सिखलाता है? कहते हैं सुरत योग। इसमें प्राणों का संयम नहीं है। इसलिए बच्चा, बूढ़ा, सब कोई कर सकता है। उसका मैं आज सवेरे जिक्र कर रहा था कि पुराने जमानों में ब्राह्मण लोग होते थे। चार साल के बच्चे को बिठा कर दो जन्मा बनाया करते थे। यह ज़िक्र आया था आज सुबह। दो जन्मे से मुराद है, to be reborn into the kingdom of God, पिंड से ऊपर जाना, into the beyond. दो जन्मा इसको कहा जाता है। वे बिठाते थे, दो जन्मा करके साथ गायत्री मंत्र देते थे। और गायत्री मंत्र में क्या दिया है? "तत्स वितुर वरेण्यम्।" अंतर तुम्हारे सूरज जैसा प्रकाश है। वे उसको प्रकट करते थे। यह उनमें समर्था थी। आज भी ऐसे ब्राह्मण लोग मिलें जिन में यह समर्था है, हम उन के पाँव धोने को तैयार हैं। ज्योति के विकास से ही आना जाना खत्म हो सकता है। यह भगवान कृष्ण जी कहते हैं।

तो महापुरुष पहले दिन ही आप को इस ज्योति का विकास, पहले दिन ही आप का दीवा मन्सा देते हैं, माफ करना। दीवा मंसाने को कहा है कि अगर जीते जी दीवा मंसा जाए तो वह गति वाला हो जाता है, बेगता नहीं मरता। मगर उस पूंजी को जो मिली है। मैंने अभी अर्ज़ किया था कि वही हमारा जीवनाधार है, उसी से हम enliven हो रहे हैं, सब कुछ उसी में होता है। आखिर वही रह जाएगा।

हुवल अव्वल, हुवल आखिर।

वही सबका जीवनाधार है। ऐसा पुरुष अगर मिल जाए तो वह हमें शब्द योग सिखलाता है। समझे। सुरत शब्द योग किस को कहते हैं। थोड़े लफ्जों में सुरत कहते हैं तवज्जो को, होश को। यह wakefulness (जागृति) जो हम महसूस करते हैं, आंखें बंद करो, खोलो, बंद करो तो एक जागृति, होश, wakefulness सी हम महसूस करते हैं, that is सुरत (वह सुरत है) और शब्द किस को कहते हैं? वह पावर जिस के आधार पर सब खण्ड, ब्रह्मण्ड चल रहे हैं। उस को धुनात्मक नाम भी कहते हैं, उसको श्रुति भी कहते हैं, उसको उद्गीत भी कहते हैं, उसको रूहानी राग भी कहते हैं, उसको आकाशवाणी भी कहते हैं, उसको नाद भी कहते हैं। मुसलमान फकीर उसे समा कहते हैं और सुलतान-उल-अज़कार, सौते सरमदी, शुगले आसिया कहते हैं। बात वही है। पिंड से ऊपर आओ, ख्वाहे योगी आए, कोई भी आए, आगे एक ही शब्द मार्ग है। जहाँ तक का किसी को ताल्लुक मिला वहाँ तक रह गये। जो सहस्रार तक गया वह आगे नहीं गया। तो शब्द की भी आगे stages (4) है। कोई अनहद शब्द है, कोई सार शब्द है, कोई सत् शब्द है, कोई सत् शब्द में लय होकर फिर अशब्द में लय हो जाता है। इसके दो ही इज़हार हैं ज्योति मार्ग और श्रुति मार्ग। इसको महापुरुषों ने, ईसाइयों ने इसको Word (वर्ड) करके बयान किया है। इसको अमृतसर कर के कहा है, ~~इस सबका प्राणों पर काबू पा कर उसके~~ साथ इसको अकथ कथा भी कहा है और अनहद शब्द कहा है। यह कुदरती है। सुरत का इसके साथ स्वाभाविक सम्बन्ध है, innate सम्बन्ध है।

देखो एक तो दरिया है, एक है लहर, एक कतरा है पानी का। तो कतरे का स्वाभाविक सम्बन्ध लहर से है। लहर समुद्र का इज़हार है (प्रकट स्वरूप है) या दरिया का इज़हार है। तो सुरत का उसके (शब्द के) साथ स्वाभाविक सम्बन्ध है, उसमें मिकनातीसी ताकत है सो ठीक है। जो यह कतरा है अब मन इंद्रियों के घाट पर घिरा पड़ा है। कोई महात्मा हमको इससे आज़ाद करे, हमको वह मिकनातीसी (शब्द) हम को खींच कर अपने आप में लय कर देता

है। कतरा लहर में और लहर दरिया में समा जाती है। तो इसलिए हठ योग की क्रियाओं से आप की जिस्मानी सेहत बन सकती है। प्राण योग से प्राणों पर काबू पाकर तंदरुस्ती और आयु को लम्बा कर सकते हो। मानसिक योग से मन पर काबू पा कर, ज्ञान योग से बुद्धि को सूक्ष्म करके जीव और ब्रह्म की एकता को समझना है, as a matter of inference (विचार द्वारा)। बाज वक्त वह कहता है, उसी में से, I am, मैं सब कुछ हूं। वह Self-awareness, self-knowledge से, यह कहो कि उसकी cosmic awareness जागती है, वह cosmic awareness भी final goal (आखिरी मंजिल) नहीं। उससे ऊपर super conscionsness है। यह किन को अनुभव होती है? इसलिए संतों का मार्ग ऊँचा है। तो इसलिए महापुरुष क्या कहते हैं कि भाई दुनिया का कोई काम नहीं जो बिना सुरत के हो। ये सुरत ही से सारे काम हो रहे हैं। जब तक सुरत साथ न हो कोई काम नहीं होता। देखिये इस जिस्म के साथ हैं कान। तुम्हारी सुरत या attention कहो एक ख्याल में महब (लीन) है। कान खुले हैं, कोई आप को आवाज देता है, आप सुनते नहीं हैं। यह natural (कुदरती) योग है। आँख खुली है, ख्याल में महब है, सुरत कहीं लगी पड़ी है। कोई आपके सामने से गुजर जाता है, आप को कोई पता नहीं। न्यूटन के पास से एक बैण्ड बजता हुआ चला गया। समझे। वह अपने mathematics के एक सवाल में लगा हुआ था। पूछा, क्यों भई न्यूटन यहाँ से बैण्ड बजता हुआ गुजरा है? वह कहता है, मुझे पता नहीं। यह है सुरत। जब तक सुरत इंद्रियों के साथ न हो, इंद्रियां काम नहीं करती हैं। तो संत महात्मा आप को पहले दिन ही सुरत की पूंजी देते हैं।

बच्चे का सवाल नहीं हल होता, ऐसे सुरत को करता है (आँख बंद करके इशारा करते हैं) ओहो ! तो सुरत यहाँ आती है। जब आप बाहर से हट कर यहाँ पर आते हो, यह है सुरत योग। इसकी development (विकास) बाकायदगी से करनी है। तो इसलिए महापुरुषों ने कहा कि जितने काम हैं वे सुरत के आधार पर हो रहे हैं। अगर सुरत साथ न हो तो कोई काम नहीं हो सकता। गुरवाणी में आया है:

जेही सुरत तेहा तिन राहो॥

जैसी सुरत होगी वैसा आगे रास्ता बनेगा। आप इस सुरते को, देखिये पहलवान लोग क्या करते हैं? कसरत करते हैं। आप की attention (सुरत) जिस्म में जाती है, जिस्म के पहलवान बन जाते हो। इसी सुरत को अगर दिमागी सैंटर से, brain centre से जोड़ो तो intellectual (बुद्धि के) पहलवान बन जाते हो। इसी सुरत को अगर आप परिपूर्ण महान सुरत से जोड़ो तो रूहानी पहलवान बन जाओगे। तो यह सारा खेल ही इस सुरत पर चल रहा है। इसलिए इस की कामयाबी होने की कुंजी क्या है कि अपनी सुरत को कंट्रोल करो। Thought कहो, attention (सुरत) कहो, यह असल में हमारी awareness (जागृति) है। यह basic (मूलभूत) चीज़ है। तो इसको पाने के लिए हमें क्या करना होगा? यही एक पूंजी है। बच्चा, बूढ़ा, जवान सब कोई कर सकता है। कोई भी हो। तो इसलिए तवज्जो या सुरत ही से वे (संत) contact (संपर्क) देते हैं। प्राणों को वे नहीं छेड़ते हैं। महापुरुष जब मिलते हैं उन में यह competency (समर्था) है। वे इंद्रियों के घाट से way up करते (ऊपर लाते) हैं।

खैचें सुरत गुरु बलवान।

समझे ! ऊपर ला कर उस सुरत को पूंजी दे देते हैं contact की। उस को दिनों दिन सेवना पड़ता है। वह पूंजी sound and light principle की (ज्योति और ध्वनि की) देते हैं। यहाँ भी दो चीज़ें हैं, एक सुरत, एक निरत। दोनों ही develop होकर उस (प्रभु) की लाईट को देखने वाला भी बन जाता है और सुनने वाला भी बन जाता है। कब? इंद्रियों के घाट से जब ऊपर आए। ऊपर अपने आप आ नहीं सकता। तो आखिर common sense (आम समझ) की बात है, अगर न आ सके तो किसी की मदद ले लो।

तो इस के तीन साधन हैं, बड़ी मोटी बात। इस में सिमरन है पहला, दूसरा है ध्यान, तीसरा है भजन। सिमरन किस को कहते हैं? किसी चीज़ का जप करना। हम दुनिया का सिमरन कर कर के, इस के संस्कार लेकर, इंद्रियों के घाट पर बैठ बैठ कर हम दुनिया का रूप बन गए। सुपने भी उसी के आते

हैं। बरड़ाते हैं तो भी दुनिया निकलती है। तो पहला काम क्या है कि जैसे दुनिया हम में बस गई (दुनिया का सिमरन करके) इस तरह दुनिया को प्रभु सिमरन से काटना होगा, कम करना होगा।

एको जप एको सालाह॥
एको सिमर एको मन आह॥
एकस के गुण गाओ अनन्त॥
मन तन प्रीत जाप भगवन्त॥

यह पहली बात। तो सिमरन पहला कदम है। जब सिमरन पक जाए तो धारणा शक्ति जाग उठती है। ध्यान किस को कहते हैं? किसी चीज़ के साथ अपनी सुरत को बांधना। इस का नाम ध्यान है। उस बांधने में जब टिकाव बनेगा, निरत खुल जाएगी, लाईट आ जाएगी। साथ शब्द के साथ, सुरत के कानों ही से उस को सुनोगे। दोनों चीज़ों के जारी हो जाने के उस लाईट मार्ग में Radiant Form of the Master (गुरु का नूरी स्वरूप) अपने आप आ जाता है। बस। God power (प्रभु सत्ता) उस शक्ल में अपने आप जाहिर हो जाती है। जब वह मिल जाएगी वही सच्चे मायनों में सिख बनता है। यह पावर सदा उस के अंग-संग रहती है, जंगलों में, पहाड़ों में, बियाबानों में। वही पहली स्टेज में दिव्य मंडलों में उस के साथ होती है। आखिर आप भी सतनाम में लय होता है, हम को भी लय करके फिर सतनाम आप को अलख, अगम, अनामी स्वामी में, Absolute God में लय कर देता है। यह है मार्ग। यह कहाँ से शुरू होता है? सिमरन से, ध्यान धारने की शक्ति से। फिर अंतर में प्रकाश होने से।

तीन बंद लगाय कर मुख से कछु न बोल।
बाहर के पट बंद कर अन्तर के पट खोल॥

बाहर से हटने का सवाल है।

साईं दा की पावणां।
इद्धरों पट्टणाँ ते उद्धर लावणां॥

बस । काम यही है। सब महापुरुषों ने एक ही बात कही है। इसीलिए कहा है:

चश्म बन्दो, गोश बन्दो लब बि बन्द।
गर न बीनी सिरे हक़ बर मन बिखन्द॥

आंखों को बन्द कर लो, कानों को बन्द कर लो, लबों को बंद कर लो। कहते हैं कि अगर हकीकत आप को न खुले तुम मुझ को मखौल (हंसी) कर लेना। तो यह पूरा साधन कहाँ से शुरू होता है। यहाँ से (दो भ्रूमध्य), नुकताए सवेदा कहो, अष्टदल कंवल कहो, दिव्य चक्षु कहो या शिव नेत्र पर जो जाते हैं, दो भ्रूमध्य, दोनों आंखों के दरमियान जो है यह रूह का ठिकाना है। इसी को "दो भ्रूमध्य नासिका का अग्र भाग" भगवान श्री कृष्ण जी ने गीता में ज़िक्र किया है। यही वह way up (रास्ता) है पिंड से ऊपर जाने का। यहीं से मर कर आगे जाते हैं। इसलिए जीते जी यहाँ आने का contact (संपर्क) महापुरुष पहले दिन ही आप को दे देते हैं। तो जिस मौत से दुनिया डर रही है न, आखरी दुश्मन जिस पर हमने फतह (विजय) पानी है, वह मौत है। मर कर तो सारा जहान ही पिंड को छोड़ता है। तो महापुरुष जब मिलता है पहले दिन मरने का experience (अनुभव) दे देते हैं। How to rise above body-consciousness, अपनी सत्या से, अपनी थोड़ी तवज्जो से। जब थोड़ी पूंजी मिल जाए तो:

गुरमुख आये जाये निसंक।

रोज़ रोज़ करो, मरने का खौफ न रहे। मरने से हम क्यो डरते हैं?

जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द॥
मरने ही ते पाइये पूर्ण परमानन्द॥

कहते हैं सारा जहान डरता है मरने से। कहते हैं मेरे दिल में खुशी होती है क्योंकि रोज़ आता जाता हूं। "गुरमुख आये जाये निसंक।" तो मरने से डरने के दो ही कारण हैं? एक कारण कि हमें मरना नहीं आता है। जिस्म

छोड़ना पड़ता है, घबराहट होती है, चिड़कता है, टांगें मारता है, बाजू मारता है। महात्मा पहले दिन तुम को पिंड से ऊपर आने का थोड़ा सा experience देते हैं, How to rise above body-consciousness. इसलिए कहा, Learn to die so that you may begin to live.

बमीर ऐ दोस्त पेश अज़ मर्ग अगर मी ज़िन्दगी खाही

अगर हमेशा की ज़िन्दगी चाहता है तो मरने से पहले मरना सीख। यह है राज़ (भेद) जो सत्स्वरूप हस्ती पहले दिन देती है। इसलिए कहते हैं कि सत्गुरु मिल जाए तो मौत का खौफ नहीं रहता है क्योंकि वह पहले दिन आपको वह पूंजी देता है। रोज़-रोज़ अभ्यास करो, "गुरमुख आए जाये निसंक।"

दूसरी बात, कहाँ जाना है, उसका पता नहीं, इसलिए घबराता है। दुनिया की attachment (मोह) बस रही है, बार-बार वहीं आता है। अगर, 'गुर परसादी जीवत मरे ताँ हुक्मे बूझे कोय।" अगर गुरु कृपा से यह जीते जी मरने के राज़ (भेद) को जान ले, How to rise above body-consciousness यह जान ले कैसे जिस्म-जिस्मानियत से तुम ऊपर आ सकते हो तो उस वक्त क्या होगा? तुम conscious co-worker of the Divine plan बन जाओगे, तुम देखोगे अब वह कर रहा है, मैं नहीं कर रहा। "नानक हुक्मे जे बुझे ताँ हौंमै कहे न कोय।" अगर तुम उस हुक्म के Conscious co-worker बन जाओ तो हौमै (अहं भावना) नहीं रहती है। इसीलिए संतों ने यह कभी नहीं कहा कि मैं करता हूँ, वे कहते हैं, वह कर रहा है। उसमें, गुरु में, वह God power (प्रभु शक्ति) काम करती है।

हर जियो नाम परेयो रामदास।

हरि का नाम ही रामदास है भाई, रामदास इंसान नहीं है। Radiant form (गुरु के नूरी स्वरूप) में वह God power इज़हार करती (प्रकट होती) है। वह तुम को कभी नहीं छोड़ती, जंगलों, पहाड़ों, बियाबानों में। अभी ज़िक्र कर

रहे थे (स्वामी जी) अरे भाई मेरे ही नहीं तुम्हारे अंतर भी है। अगर आपको नहीं मिली तो तुम्हारा कसूर है। तो असल में जब यहाँ पहुँच जाए, (नूरी स्वरूप तक) फिर आगे काम शुरू होता है।

तो गुरु भक्ति, गुरू का प्यार किस बात में है? उस की celebration किस बात में है? कि उसको माथा तो टेके, उसका कहना न माने? वे क्या कहते हैं? कि तुम जीते जी मरना सीखो पहले ही दिन।

नानक ऐसी मरनी जो मरे ताँ सद जीवन हो।

अगर ऐसे जीते जी मरना सीख जाओ तो हमेशा की ज़िन्दगी को पा जाओगे। तो यह वह राज़े-जिन्दगी है जिसको वेह हल कराते हैं, महापुरुष। यह संतों के हाथ में है। उनका कुछ नहीं लगता। समुद्र से लाखों जीव पानी पी जाते हैं, उसमें कमी कभी होती है? आलिम (विद्वान) आपको इल्म सिखला सकता है। समझे। और डाक्टर आपको जिस्म की साईंस का माहिर कर सकता है। अरे भाई आत्म-अनुभवी आपको बिठा कर थोड़ी तवज्जो देकर दस, बीस, सौ, पाँच सौ बैठे, सबको way up (पिंड से ऊपर लाएगा) सबको experience (अनुभव) मिलेगा। अक्षरों का बताना यह नाम का देना नहीं है। हमारे हजूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) फरमाया करते थे कि चरखा कातने वाली लड़की भी अक्षर बतला सकती है। सवाल यह है, experience (अनुभव) का, पूंजी देना है। थोड़ा अनुभव पिंड से ऊपर आने का, How to rise above body consciousness, यह अनुभव थोड़ा मिले तो फिर दिनों दिन बढ़ा लो उसे (अभ्यास करके) तो इस काम को करने के लिए गुरु का मुहताज होना पड़ता है, जो इसमें माहिर हो। तो इसलिए कहा है कि:

कर्म होवें सतगुरु मिलाये।।
सेवा सुरत सबद चित्त लाये॥

सारे महापुरुषों ने इसीलिए कहा है:

पीर गर जिन्दगी बे पीरान ई
सफर पुर आफ़तो पुर खतर।

अन्तर जाना है। बाहर भी किसी न किसी उस्ताद की जरूरत पड़ती है भाई। एक ऐसी मंजिल में जाना है जो अंधेरे के पार है। क्या वहाँ किसी को जरूरत नहीं है practical self-analysis करने में, पिण्ड से ऊपर आने की विद्या सीखने में? पुराने महात्मा क्या हमें इस बात में मदद कर सकते हैं? भाई guidance की तो ज़रूरत है, जैसे मैंने अर्ज किया है, ग्रंथों पोथियों के समझने के लिए भी right import (सही मायने) किसी अनुभवी पुरुष की ज़रूरत है जिसने उस तरफ कदम उठाया है और दूसरे उठाया ही नहीं बल्कि हमें contact (परिचय) भी दे सकता है। इसलिए किसी जिन्दा महापुरुष की ज़रूरत है जो हम को इन हिसों से (इंद्रियों के घाट से) ऊपर ले आए । जब तक आप इन हिसों से ऊपर नहीं आते, इंद्रियों के घाट से, तुम गैब (अदृष्ट) की तसवीर से बेइल्म (अनजान) रहते हो। तो यह खास कर subject था जिसकी पूर्ति हमारे हजूर ने की है। वह पूर्ण महापुरुष थे। उन के हाथ में यह बागडोर थी, यह portfolio (महकमा) उन का था।

तुरत मिलावें राम से उन्हें मिले जो कोय।

उन के जीवन में देखा गया, कई बार कहते थे, शब्द सुनो, यह शब्द आ रहा है। सुनने वाले आ जाते थे। सुनने में आ जाती थी।

धुन आवे गगन ते सो मेरा गुरुदेव।
गुरु वही है जो अंधेरे में प्रकाश करे।

संत संग अंतर प्रभ डीठा॥
सत्गुर मिले तां अक्खीं वेखे॥

यह नहीं कहा कि मर कर मिलेगा। अब आंख बंद करते हो, अंधेरा है। जो यह स्याही के पर्दे को हटा सकता है उस का नाम असल मायनों में है, सत्गुरु।

परदा दूर करे आंखन का निज दरसन दिखलावे।
साधो सो सत्गुरु मोहे भावे॥

हमारे हजूर में यह काबलियत थी, competency (समर्था) थी। तो महापुरुष की यही निशानी है कि जो तुम को कुछ दे सके। तो उन की याद में आज का दिन सुबह का और कल शाम का गुजरा मगर असल बात यह है कि सत्संगी बनने के लिए हम समाजों में दाखिल हुए, महापुरुषों के चरणों में गए। उन्होंने हमें सत् के संग की पूंजी दे दी। उस को हमने बढ़ाना है। अरे भाई जिस को ऐसे महापुरुष नहीं मिले उन को अभी तक प्रभु की तरफ से दया नहीं हुई। अरे भाई जिन को ऐसे पुरुष मिल गए और contact (पूंजी) दिया है, फिर नहीं करते उन के लिए बदकिस्मती है। तो उस के लिये, कैसे सत्संगी वह बने? यह detail में (विस्तार में) कल अर्ज़ किया था। आज सुबह भी इसी बात के बारे में कि कैसे contact हो सकता है, क्या है यह साईंस, इस को बयान किया था, हजूर की life (जीवन) के मुखतलिफ पहलुओं के touches दे कर यह मजमून पेश किया गया था। तो हमारे हजूर इस श्रेणी (पदवी) के मालिक थे कहो, जिस के दुनिया में बहुत कम लोग ऐसे आया करते हैं। उन्होंने वही तालीम दी जो परंपरा से चली आई। वे किसी समाज के खिलाफ नहीं थे। न पुरानी तोड़ते थे मैं आप को यह अर्ज़ करूं। वह यह फरमाया करते थे कि कुएं आगे ही बहुत लगे पड़े हैं। कुएँ पर एक और नया कुआं लगाने की क्या ज़रूरत है? जिस समाज में हो उसी में रहो, महापुरुष तो हर एक समाज में आए हैं। रविदास जी चमार थे, नामदेव जी छींबे थे, कबीर साहब जुलाहे थे, तुलसी साहब ब्राह्मण थे। गुरु साहिबान, स्वामी जी महाराज खत्री थे। अरे भाई खत्री, ब्राह्मण, वगैरा यह लेबल (ठप्पे) तो हमने लगाए हैं। परमात्मा ने तो आत्मा देहधारी बनाए हैं। आत्मा की जात वही है जो परमात्मा की जात है।

तो हमारे हजूर की इस वक्त दुनिया में बड़ी भारी ज़रूरत थी जब कि हर एक इंसान बाहिरमुखी साधनों ही में प्रवृत्त होकर उसी को be all and end

all (सब कुछ उसी को) समझ रहे थे। हर एक चीज़ की अपनी अपनी कीमत है। सुई की अपनी कीमत है, पीतल की अपनी कीमत है, लोहे की अपनी कीमत है। तो हर एक चीज़ की value ज़रूर है। कीमत मगर अपनी अपनी दर्जे बदर्जे है। रुपये को रुपया कहो, पौंड को पौंड कहो। तो सब महापुरुष कहते हैं भाई सुरत (आत्मा) basic (मूल वस्तु) चीज़ है। खाली जिसके साथ सुरत है उसी को कामयाबी है। अगर सुरत के साथ आप इन इंद्रियों के contact में नहीं आते ये काम नहीं कर सकती। सुरत कब सुरत बनेगी? जब आप इंद्रियों के घाट से आज़ाद होंगे। मगर यह कैसे हो? इसी लिए हम महापुरुषों के पास जाते हैं। वे हमें इंद्रियों के घाट से way up करने का थोड़ा experience (अनुभव) देते हैं। थोड़ा (पिंड से ऊपर लाकर) higher contact की पूंजी देते हैं। फिर उसको दिनों दिन बढ़ाओ और आप कामयाब हो सकते हो। तो इसलिए महापुरुष जब भी आते हैं इस बात पर परंपरा से जोर देते हैं। यह natural course है जिसमें न कोई alteration (परिवर्तन) हुई न होगी। समझे। न कोई चीज़ उसमें डाली गई। मगर महापुरुष आते रहे, हम को यही सबक देते रहे। जब वे चले गए हम भूलते रहे। फिर कोई और महापुरुष आ कर हमें जगाते रहे। यह सिलसिला परंपरा से चला आता है। कबीर साहब थे, गुरु नानक साहब थे। अरे भई पुरातन ऋषियों मुनियों ने भी इन स्टेजों (दर्जों) का जिक्र किया अपने अपने मुताबिक। अरे भाई शब्द मार्ग ही, शुरू से आखिर तक उसी के सब पुजारी हैं। नाम की किताब (श्री संत कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक, Naam or word) जो लिखी गई है, उसमें मुखतलिफ (विभिन्न) मजहबों से हवाले दिये गए हैं इस विषय पर, वह आप के पास है। उसमें ज्यादा detail (विस्तार) से यह बात पेश की गई है। तो हमारे हजूर इस सुरत शब्द योग के बड़े भारी competent (समर्थ) पहलवान समझो, सुरत योगी समझो और महापुरुष हुए हैं। तो उन के पास जाकर इस बात की सूझत होती थी। उन का दिन है आज का दिन। मैं अभी यह अर्ज़ कर रहा था कि वह God power (प्रभु सत्ता) थी, क्राईस्ट पावर थी, वह God in man power थी, वह काम कर रही थी उस पोल पर। हमारी खुश किस्मती है जिन को उनके दर्शन नसीब

हुए हैं। जिन्होंने वह आंखें देखी हैं वे भूल नहीं सकते हैं। समझे। उनके चेहरे पर एक लाट थी, कभी भूल नहीं सकती है। उनको देख देख कर हमारी आंख रोशनी पाती थी, उन से रूह को एक बड़ी प्यार की फज़ा मिलती थी। उन की याद दिन रात है, जिस ने एक बार वह सूरत देख ली। उस में एक रूहानी खूबसूरती होती है।

जहाँ हुस्न नहीं वहाँ इश्क भी पैदा नहीं होता।
बुलबुल गुले दीवार पे शैदा नहीं होता॥

बुलबुल हमेशा फूलों पर चहचहायेगी, कभी दीवारों पर उकरे हुए फूलों पर या कागजी फूलों पर नहीं चहचहायेगी। अरे भाई जिस में अंतर की वह रूहानियत की झलक है:

काया कामण अत सहालेयो पिर बसे जिस नाले॥

जिस काया में अंतर वह प्रभु प्रकट है, जो mouthpiece of God है, उसकी काया अति सुंदर है। उनके चेहरे से वह जलाल टपका करता था। एक दफा उनकी दाढ़ी को देखो, दूर से ऐसे मालूम होती थी जैसे सोने की तारें जुड़ी पड़ी हों। मालूम होता था कि न मालूम कैसा खिजाब लगाया हुआ है। तो वह रूहानियत की झलक होती है जो उनकी आत्मा से निकलती है। वह एक बार नज़र जिस पर पड़ जाती थी या कोई उनको एक बार देख लेता था, दिल में वह समा जाती थी तसवीर, छोड़ती कभी नहीं थी, अंत समय भी। कहते हैं महापुरुषों के पास बड़ी खूबसूरती दी है। यह देखा गया है कि जिस पर भी एक बार उनकी नज़र पड़ी, वह फिर अंत समय उसकी सम्भाल करते हैं। और अब भी आते हैं, आगे भी आते रहेंगे।

जिस्मानी तौर पर ज़रूर वह चोला छोड़ गए हैं। बाहर चोले में जो खूबसूरती है, उस में दो दो खूबसूरतियां है याद रखो। अगर अंतर में भी वह चीज़ मिलती रहे, थोड़ी थोड़ी ढारस रहती है मगर जो खूबसूरती बाहरी चरणों में है, अरे भाई अंतर में वह खूबसूरती नहीं रहती, बड़ी मोटी बात। एक से हमारी मित्रता

हो, मित्र हो। वह स्वांग बदल कर आ जाए। उसको देख कर आप को डबल शौक बढ़ता है कि नहीं? समझे। यहां पर वारिसशाह का ज़िक्र आया कि, ''रांझा जोगियड़ा बन आया।'' वह God in man झलकें देता हुआ इंसानी सूरत में, चलता फिरता नजर आ जाए तो कितना खूबसूरत मालूम होगा? हजूर से एक बार ज़िक्र हुआ कि महाराज- याद रखो सिख को गुरु का प्यार होता है। गुरमुख वही है जिस के अंतर सिवाय गुरु के और कोई न बसे।

चुनां पुरशुद फिजाये सीना अज दोस्त।

मेरे सीने की फिज़ा उस प्यारे प्रीतम से इतनी भर गई।

ख्याले खेश गुम शुद अज जमीरम॥

कि मुझे अपना ख्याल ही नहीं कि यह मैं हूं या वह है। यही सेंट पाल ने कहा है, It is I. कि यह मैं हूं। कहते हैं, not now I, It is Christ that lives in me. (नहीं अब मैं नहीं रहा, मुझ में क्राईस्ट बस रहा है)। जो इस अवस्था को पा गया, गुरु की गोद में समा गया, वह फ़नाफिशैख (गुरु में लय होकर) फ़ना फिर अल्लाह हो गया (प्रभु में समा गया)। तो यह है गुरु भक्ति का राज़ (भेद)। जिस के अंतर यह नहीं वह सिख कहा ही नहीं जा सकता। क्राईस्ट ने एक मिसाल दे कर समझाने का यत्न किया है। क्या कहते हैं, एक अंगूर का पेड़ है। उस में जो शाखें लगी रहें वे फल देती हैं। जो कट जाए वे फल नहीं दे सकती। इसी तरह फरमाने लगे, I am the vines कि मैं अंगूर का पेड़ हूँ। Thou art my branches, कि तुम मेरी शाखें (टहनियाँ) हो। जब तक शाखें मुझ में जुड़ी रहेंगी, You will bring forth abundant fruit. तुम फल दे सकोगे। अगर कट जाओगे तो नहीं। अरे भाई God in man अगर वह हमारे अंतर प्रकट हो जाए तो God इस शक्ल में आ सकता है। इंसान इंसान के अंतर नहीं जा सकता, बड़ी मोटी बात। तो Guruman ही पा सकता है। गुरु भक्ति ही एक रास्ता है। सब मज़हबों

ने, सब महापुरुषों ने यह जीना (रास्ता) बतलाया है।

गुरु भक्ति किस को कहते हैं? सवाल यही रहा। क्या डौं-डौं करने में ही गुरु भक्ति है? क्या गाजे बाजे बजाने में या मारकीट लगाने में या बड़ा मेला और कथा कर लेने में? न भाई। किसी महापुरुष की याद इसी बात में है कि जो पूरने उस ने डाले थे हमारे सामने, जो तालीम उस ने हमें दी थी उस को कहाँ तक निभाया है। उसने सतसंगी बनाने के लिए हमें अपने चरणों में लिया था। सत् के संग की पूंजी भी दी थोड़ी सी। उस को develop करना (बढ़ाना) था। देखो तुम कहाँ तक गए हो। पिछले साल कहाँ थे? आज कहाँ हो? असल commemoration (मनाना) किसी महापुरुष की यादगार किस बात में है? इसी बात में थी कि जो सबक उन्होंने दिया है हमें, वह सत् का संग कितना मिल चुका है? कहाँ तक पहुँचे हैं। क्या, ''वही है चाल बेढंगी जो आगे थी सो अब भी है।'' क्या हम पहली जमात में थे, अब दूसरी में चढ़े, अब तीसरी में चढ़े? कई भाई मिलते हैं, वे कहते हैं भाई पहले बड़ा कुछ बनता था अब कुछ नहीं रहा। अरे भाई दिनों दिन तरक्की होनी चाहिये कि तरट्टी होनी चाहिये, तनज्जली (गिरावट) होनी चाहिये? उसका कारण यह है कि जो हिदायतें उसको (पूंजी को) बरकरार रखने के लिए हम को दी जाती हैं उस पर हम अमल नहीं करते। बस। बात यही है।

और इस के अमल करने के लिए काबलियत पैदा होने के लिए सिर्फ एक साधन कर लो। प्रेम। परमात्मा प्रेम है। आत्मा उसकी अंश है। इसलिए in-nate (जन्मजात) तौर पर वह प्रेम की अंश है और प्रेम ही से प्रभु मिलता है। दशम गुरु साहब ने ज़िक्र करते हुए मुखतलिफ भेखों का बयान किया।

साच कहूँ सुन लेहो सबै जिन प्रेम कियो तिनही प्रभ पायो॥

कि ऐ भाई मैं तुम को सच सच बात कहता हूँ कि जिन्होंने प्रेम किया वही प्रभु को पा सकेंगे। समझे। प्रेम की क्या निशानी है? जब याद आए दो

आंसू भर आएं। बस।

बोल कुछ न कहे पर आंख देत है रोय।

यह निशानी है प्रेम की। देखो दुनिया के लिए आप के आंसू बहे, बच्चा बीमार हो जाए, कोई बीमार हो जाए, कोई मर गया, कोई कुछ हो गया, कोई नुकसान हो जाए, हौके लेता है, हाय हाय हाय करता है, जारो-जार रोता है। अरे भाई तुम्हारे अंतर प्रभु की याद के लिए भी आंसू कभी बहे हैं? आंसू असल मायनों में वही हैं जो आंसू हों, उस तरफ के लिए हों। ये जो आंसू हमारे बह रहे हैं, ये सब ईसू हैं, दुनिया के लिए हैं। जिस के अंतर उस के लिए आंसू बहते हैं वह मर कर कहां जाएगा? वहीं जिस तरफ के लिए उस के आंसू बह रहे हैं। आप मेरी बात समझे? तो प्रेम ही से प्रभु मिलता है।

साच कहूं सुन लियो सबै जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभ पायो॥

प्रेम किस से हो? सवाल यह रह गया। अरे भाई यह दिल परमात्मा की अमानत है। उस (प्रभु) से प्रेम बढ़ाओ। जब तक उसको नहीं देखा, जिस इजहार में (प्रकट रूप में) वह बाहर हमारी ही तरह मलमूत्र का थैला लेकर चलता फिरता जीवों को निकालने के लिए, भूली हुई रूहों को ढूंढने के लिए वह आता है, उस के साथ प्यार करो। उसका प्यार प्रभु का प्यार है।

हर की पूजा सतगुर पूजो

जब तक हरि को नहीं देखा, जो उसका स्वरूप बन गया उसकी पूजा की हरि की ही पूजा है। बाहरी लैवल में अनुभवी पुरुष को, पूर्ण पुरुष को तो एक पापी भी देख सकता है। अरे भाई उस परमात्मा को कौन देखेगा? जो उस लैवल में आ जायेगा। तो इसलिए बड़ी भारी बरकत है किसी सत्स्वरूप हस्ती का मिलना। ऐसे महापुरुष का मिलना प्रभु का मिलना है। इसलिए महापुरुषों ने कहा है कि अगर तुम किसी वली-अल्लाह (पूर्ण पुरुष) के नजदीक आ गए समझो तुम प्रभु के नजदीक आ गए। अगर तुम किसी वली-अल्लाह से दूर हो गए, समझो

तुम प्रभु से दूर हो गए। तो किसी अनुभवी पुरुष की निशानी क्या है:

कोई सतगुर सन्त कहावे नैनों अलख लखावे।।

कोई अपने आप को संत सतगुरु कहलाता है, वह आंख बनाता है जिस से वह इंद्रियों के घाट से नहीं लखा जाता, हम उस के देखने वाले बन जाते हैं। यही निशानी है। जाओ ढूंढो जहां मिलता है। एक मिले, दस मिलें, पचास मिलें, हजार मिलें, अरे भाई सच्चे मायनों में तुम किसी समाज में रहो, गुरसिख बनो, बस तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। गुरु वह है जो जाग उठा है। जो जागा है वह तुम को जगा देगा। बस। बात तो यही है। तो आज का दिन उस महापुरुष, पूर्ण पुरुष, जिस के मिलने से हमें होश आई और जिस की कृपा से अब भी यह सिलसिला सारा चल रहा है, यह सब उस की कृपा से है और यह जो कुछ चल भी रहा है, यह उन के हुक्म के ही मुताबिक चल रहा है। उन्होंने फरमाया, अन्त समय जब आया थोड़ा सा, तो स्वामी जी को जो आज दृष्य आया, पेश कर दिया। तो मेरे पास पूछने गए कि यह बात क्या है? मैंने क्या देखा? मैंने कहा कि यह एक दृष्य आप को बताया गया। तुम कहते हो commemoration क्या होती है। तो यह वह दृष्य था जो आंखों में आंखें डाल कर एक जलवा पैदा कर गए। उसी की बरकत से आप को चीज़ मिल रही है। तो उन के पास, यह नवम्बर सैंतालीस की बात है, वह फरमाने लगे कि भाई एक ऐसी कामनग्राऊंड रखो जिस पर सब समाजों के भाई इकट्ठे हों, अपने अपने बोले रखें, अपनी अपनी समाजों में रहें, अपने अपने लेबल लगाए रखें, सदाचारी जीवन रखें और इंद्रियों के घाट से ऊपर परिपूर्ण परमात्मा से जुड़ जाएं। उस का नाम रूहानी कालेज रखो, रूहानी सत्संग रखो, यह लफ्ज़ उन्हीं का तजवीज किया है, मेरा नहीं। तो उनकी मंजूरी से ही यह सिलसिला चला जिस का नाम रूहानी सत्संग है, जो आप के सामने है। इस में उन ही की बरकत काम कर रही है।

महापुरुष इंद्रियों के घाट से ऊपर होते हैं। मैं आप को आज का थोड़ा सा दृष्य पेश कर दूँ, महापुरुषों के बड़े तरीके होते हैं समझाने के लिए। उन्होंने फरमाया

कि मुझे अंत समय तकलीफ होगी जिस्मानी तौर पर। वह तकलीफ दूर होगी कब? जब जिसने मेरे पीछे काम करना है वह जब मेरे पास बैठेगा। और लोगों ने बहुतेरा जोर लगाया। कोई ऐसा सामान बन गया तो आखिर मेरे पास आए। कहने लगे भाई, जिनको पता था, हजूर ने फरमाया था कि भाई मैं यह दौलत तुम को बख्शता हूँ। वे आए, कहने लगे, भाई हजूर ने यह फरमाया था, हमें पता है। आप चलो, उनके पास बैठो, शायद तकलीफ रफा हो जाए। एक बात, एक ज़रिया था समझाने के लिए। खैर, मैं गया। मैंने कहा, पांच मिंट मुझे अलहदा वक्त मिलना चाहिये, कोई अंदर न हो। सब चले गए। मैं रहा और हजूर रहे। तो मैंने प्रार्थना की कि महाराज जो इंद्रियों के घाट से ऊपर जाते हैं उनके जिस्म को कोई काट ले उन को क्या तकलीफ, आप वह हो जो जब चाहो:

गुरमुख आए जाय निसंक।

आप पूर्ण पुरुष हो । आप को तो कोई तकलीफ नहीं, हम से यह दृष्य देखा नहीं जाता, दया करो। जब आँख खोली तो बिल्कुल calm and quiet, कोई तकलीफ नहीं, आँखें खोलीं, बड़ी, जैसे शेर बबर की होती हैं। देखते रहे। जैसे चार्जिंग होती है सारे जिस्म में होती रही। दो, तीन, चार मिनट तक देखते रहे। फिर आंखें बन्द कर लीं। Very calm and quiet वही जो पहले रौनक थी, वही तीन धारें जो चलती थीं माथे पर, बिलकुल शान्त, गंभीर। मैंने बुलाया उन को जो बाहर खड़े थे, देखो भाई हजूर को कोई तकलीफ बाकी है? तो यह उन की अपनी बरकत थी।

अरे भाई यह चीज़ें आंखों से मिलती हैं यह याद रखो, समझे। Life comes from life, (जिंदगी जिन्दगी से आती है)। तो उसी की बरकत से आप भाईयों को फैज मिल रहा है। उन्हीं की बरकत से यह सब कुछ जो सिलसिला चल रहा है, यह वही चला रहे हैं। यह मेरा काम नहीं है। हजूर के वक्त वे फरमाया करते थे, मैं यह नहीं करता यह सब बाबा जी कर रहे हैं। मैं यह समझता था कि शायद यह उनकी नम्रता है, अपने आप को नम्रता

करके बयान करते हैं। अब मैं सचमुच देखता हूँ कि वह कर रहे हैं, मैं कुछ नहीं कर रहा। वह कहते हैं वैसे ही नाम वाला सिलसिला बन गया है। कर वह रहे हैं, नाम खामखाह मेरा हो रहा है। मैं सच्चे दिल से कह रहा हूँ कि वही कर रहे हैं और उन्हीं के आधार सब कुछ चल रहा है, नहीं तो मेरा न कोई प्रचारक, माफ करना, न कोई paid न कोई प्रापेगंडा करने वाला, इन में से कोई भी नहीं। साधारण लोग जो आ जाते हैं उन को वह बरकत मिल जाती है। वही आगे लोगों को समझाते हैं कि भाई चीज़ मिल रही है। तो वह सारा काम उन की कृपा से हो रहा है।

अरे भाई आज आप उनकी याद में बैठे हो, आज सुबह भी मैंने अर्ज़ किया था, कल शाम भी कि भाई सत् के संग के पाने के लिए मनुष्य जीवन मिला है। इस के लिए हम समाजों में दाखिल हुए थे। सारी समाजों में जो महापुरुष आए हैं यही कहते हैं कि जाओ किसी अनुभवी पुरुष के पास जिसने इस सत् के संग को पाया है, उस की संगत सोहबत करो। उन की जो संगत करते हैं उन को पहले दिन तुम को सत् के संग की थोड़ी पूंजी दे देते हैं इंद्रियों के घाट से ऊपर ला कर और आगे सिलसिला क, ख, का शुरू होता है। विद्या अनन्त और अथाह है। जो अनुभवी पुरुष आते हैं वे भी कहते हैं वह अथाह है। अरे भाई जिस को यह थोड़ी पूंजी मिल गई है, हमारा फर्ज़ क्या है कि हम उस को अपने जीवन का हिस्सा बनाएँ। कहते हैं, live that life रहनी का नमूना बन जाओ, example is better than precept. एक नमूना बन जाओ। बेड़ा पार हो जाएगा। पहलवानी की किताबें हजार पढ़ लो, पहलवानी की कोई झलक नहीं होगी। दूसरों पर भी हजार लैक्चर दो, कुछ नहीं होगा। हाँ पहलवान के पास बैठ जाओ, शौक भी बनेगा और पहलवान बन जाने पर सारा जहान भागा आएगा तुम्हारे पास, समझे।

यह जिस्मानी पहलवान कैसे बने? सुरत को जिस्म के साथ जोड़ जोड़कर। बुद्धिवान कैसे बने? सुरत को brain (दिमाग) के centre (सैंटर) से जोड़

जोड़ कर । अरे भाई रूहानी पहलवान कैसे बने? सुरत को महान सुरत से जोड़ जोड़ कर। इस का जोड़ना जो है वह गुरु ही कर सकते हैं। हमारी बड़ी खुशकिस्मती थी, गो (चाहे) इस खुशकिस्मती के साथ दुख भी बहुत है, इस में शक नहीं। लोग कहते हैं कि भाई ज्ञानियों ध्यानियों को कोई दुख नहीं होता। भाई होगा। मैं तो अपना ज़िक्र कर रहा हूँ। जब हजूर चोला छोड़ गए मैं तो जंगलों में चला गया था। यही प्रण किया था कि मैं दुनिया में नहीं आऊँगा मगर फिर प्रेरणा हुई कि चलो वापस। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब क्या है? एक दफा गुरमत सिद्धान्त (पुस्तक) लिखी गई जब, हजूर ने लिखाई थी। उस में कहीं गुरु सिख का एक मजमून दिया था। उस में दो तीन चार पृष्ठ ऐसे आए कि जो महापुरुष चोला छोड़ जाए तो उस के सिखों की क्या हालत होती है। वहाँ पर गुरु अंगद साहब का ज़िक्र आया, वह कहते हैं :

धृग जीवन संसार ताके पाछे जीवणा॥

और कई महात्माओं का ऐसे ही ज़िक्र होता रहा, तो एक जरजरी महात्मा हुए हैं, उस का ज़िक्र आया। उस का गुरु चोला छोड़ गया, समझे। तो कहते हैं कि जब वह आए कब्र पर तो वह लेटे यह कह करः

बे यार गार बूदन मुरदन हज़ार ऊला।

कि यार गार के बगैर दुनिया में रहने से मरना बेहतर है। कब्र पर लेट गए और मर गए। खत्म हो गया। हजूर यह वाकेया दो तीन बार सुनने के बाद कहने लगे, कृपाल सिंह, फिर पढ़ो इस को। तीन चार बार पढ़ाया और कहा, फिर पढ़ो। वह यह बतलाना चाहते थे कि ऐ बदकिस्मत इंसान! यही वक्त तुझे देखना नसीब होगा।

खैर भाई उन की कृपा है। हजूर फरमाया करते थे, एक बार ज़िक्र हुआ कि महाराज आप तो बाबा जी का स्वरूप हैं, बाबा जी सदा ही आप के अंदर हैं। तो फरमाने लगे कि भाई अगर आज बाबा जी चलते फिरते आ जाएँ तो

मैं अपना सर्वस्व वार दूं, समझे। मैंने कहा कि आप के अंतर तो बाबा जी हैं, आप से कभी जुदा नहीं हुए, यह क्यों है ? फरमाने लगे, कृपाल सिंह, तुमको नहीं पता। भाई वाकई वह बात है, जिन्होंने वह चरण देखे हैं, वह आँखें देखी हैं, उनको चैन हो नहीं सकता। कैद भुगत रहे हैं, सच्ची बात यह है । गुरु के बाद जीना मौत से बदतर है। वे खुशकिस्मत इंसान हैं कि जिस के हाथों में पैदा होते हैं उसी के हाथों में चले जाते हैं। पीछे भी वह ताकत नहीं छोड़ती है, इस में कोई शक नहीं है। क्राईस्ट ने कहा, I shall never leave thee nor forsake thee till the end of the world। भाई बाहर में दो लुत्फ हैं, अंतर में एक है, समझे। उस साये में जा कर सब दुनिया भूल जाते हैं, सब दुख भूल जाते हैं। कई बार बड़े इरादे दिल में करके जाया करते थे। वहां जाना, सब कुछ भूल जाना। सब भूल जाता था। इसी लिए कहा :

माई गुर चरण अत मीठे।

बड़े भाग्य हों तो प्राप्त होते हैं, बड़े भाग्य से मिलते हैं। अरे भाई किसी जिन्दा living master के चरणों में बैठना एक बरकत, blessing है। जिनको मिले हुए हैं वे खुशकिस्मत इंसान हैं भाई। जो सच्चा उनका दिन मनाना है उसकी गरज यह है कि जो पूंजी उन्होंने दी है उसको बढ़ा लो, समझे। आप संगत यहाँ आ गई, मेरी कोई गरज नहीं थी। मैंने कभी किसी को कोई चिट्ठी नहीं लिखी शुरू से आखिर तक, अपने आप आते हैं। मैं समझता हूँ हजूर भेजते हैं। अच्छा भाई थोड़ा बहुत लंगर का सामान करना पड़ता है। यह संगत ही लाती है और संगत ही खा जाती है, माफ करना। मगर देखने की बात है, आप आए हैं तो हजूर की बातें करनी ही हैं।

हजूर एक दफा फरमाने लगे, अरे भाई यहाँ जो लोग आते हैं, मैं यहाँ मेला नहीं बनाना चाहता। अरे भाई यह मेला समझ कर मत आया करो। यह समय आपको मिला है, घर से आजाद हुए हो, उसी की याद में दिन रात गुजारो, उसी के लिए जियो। जो सिख गुरु के लिए जिये, जीवनाधार जिसका गुरु बन

जाए, अरे भाई उसको तीन लोकों में भी डर नहीं।

गुरु को सिर पर राखते चलते आज्ञा माहिं।
कहें कबीर तिस दास को तीन लोक डर नाहिं॥

मगर याद रखो, फिर मैं अर्ज़ करूँ, जो अनुभवी पुरुष का इस जिन्दगी में लुत्फ है, पीछे नहीं। उसकी जो बातें सुनाएः

जो मेरे हर प्रीतम की कोई बात सुणावे सो भाई सो मेरा वीर॥

वह अच्छा लगेगा। मगर फिर उसके पाने, बात सुनाने वाला भी अच्छा लगेगा। अरे भाई बातें सुन कर भी फर्क पड़ता है। जब ऊधो को भेजा भगवान श्री कृष्ण जी ने गोपियों को जरा तसल्ली देकर आओ। गए। ज्ञान ध्यान की बातें सुनाने लगे। सुन सुना कर आखिर गोपियाँ कहने लगीं, ऐ नारायण ! यह जो तुम कहते हो बातें ठीक हैं। जो आँखें उस मुरली मनोहर को देखना चाहती हैं, उसके लिए तेरे पास क्या इलाज है? अरे भाई जिन्होंने उसकी झलक देखी है, आज किस भाई के पास यह ताकत है कि वह झलक आज दिखा सके? अब एक रास्ता बाकी रह गया। वह क्या? अन्तर्मुख होने से ही, उनकी कृपा से अब भी जो अन्तर्मुख होते हैं उनको स्वरूप आता है। आज भी सुबह दो सौ के करीब को स्वरूप आया था। अरे भाई बनाने की जरूरत नहीं। खुदा वही है जो खुद आप आए। जब नाम देता है, साथ हो बैठता है वह God power है, जिस्म नहीं है। जिसके अंतर है, जो सत्गुरु पावर है, वह कभी नहीं छोड़ती। वह अब भी तुम्हारे अंतर है। मैं यह देखता हूँ कि नयों की सम्भाल भी वह कर रहे हैं। कई दफा एक स्वरूप आता है, कईयों को दो दो स्वरूप आते हैं। कइयों को आते हैं और ऐसे ऐसों को स्वरूप आता है जिन्होंने कभी सुना नहीं, देखा नहीं, ख्वाबो ख्याल भी नहीं। जब फोटो बताते हैं तो कहते हैं हाँ यही थे। इसमें साफ बात यह है कि उनकी बरकत से यह काम चल रहा है। मैं अब भी देख रहा हूँ कि वह कर रहे हैं, मैं नहीं कर रहा। अगर कोई credit (श्रेय) अगर किसी भाई बहन को कुछ फायदा मिल रहा है तो वह

उनकी कृपा से, मेरी नहीं। अगर थोड़ी बहुत चीज़ आप भाईयों को नज़र आती है तो उस्ताद पढ़ाने वाले का credit है जिसने बख्शी है। यह चीज़ तो आप भाईयों का शुक्रिया, आप ने कल शाम, आज सुबह, आज शाम अरे भाई गुरुमैन बन जाओ। बस world से, लफ्ज है, अंग्रेजी का, world से L को, मैं पना बीच से निकाल दो। Word बन जाओ, काम बन जाएगा, बेड़ा पार हो जाएगा। यह Word कैसे बनोगे? जब मैं पना नहीं रहेगा। मैं पना कब हटेगा? जब गुरु भक्त बन जाओ, बस। उसके कई तरीके हैं, साफ करने के मैंने यही अर्ज़ किया था। वह स्कूल में दाखिल कर लेता है, बनाने के लिए भी। डबल ड्यूटी, साथ में सत् के संग की पूंजी देकर उस में काम करने के लिए भी। तो आज हम सब भाइयों और बहनों की खुशकिस्मती है कि उन की याद में कल शाम, आज सुबह, आज शाम का वक्त गुजरा। तो आज के बाद हमें क्या करना होगा? क्या इस कान से सुन कर उस कान से निकाल देना है? अरे भाई एक सबक साथ लेते चले जाओ। उस महापुरुष की याद दिल में बसाओ। बैठते, उठते, सोते, जागते उसी की याद। जैसे स्त्री को पति का ख्याल है, कहीं भी चले जाए, दिल से नहीं भूलता, सिख के अंतर गुरु का ख्याल उससे भी ज्यादा होना चाहिए। जिसके अंतर वह ख्याल बनेगा उसका बेड़ा पार है।

As you think, so you become, हां गुरु गुरु हो जरूर, यह याद रखो नहीं तो जैसे का ध्यान करोगे वैसा बनोगे। यह ध्यान अपने बनाने से कभी नहीं बनता। अपने जैसे का तो ध्यान बन जाएगा मगर जो हमारे लेवल से ऊँचे हैं उन का ध्यान बनता नहीं। खुदा वह है जो अपने आप आए। इसी लिए मैं किसी को ध्यान नहीं बतलाता। मैं यही कहता हूं भाई बैठो, चलो अंतर, अपने आप आएगा। तो आज के बाद आप ने फिर देखना होगा कि हम कितने सत्संगी बने हैं, जिन को सत् के संग की पूंजी नहीं मिली वे इस तलाश में रहें। सत् के संग की पूंजी मिलने के बगैर हमारा जन्म मरण रहेगा, समझे। अगर जीवन का बीमा न हो, जान तो देनी है ज़रूर, यमों को देनी पड़ेगी। क्या अच्छा हो पहले ही जान किसी समर्थ पुरुष के हवाले कर दो, तुम्हारी ज़िन्दगी का बीमा

हो जाये। मेरे पास एक दफा बीमा एजंट आया। वह कहने लगा भाई अपनी जिंदगी का बीमा करा लो। तो मैंने उसको कहा कि भाई मैं जिंदगी का बीमा तो करा चुका हूँ हजूर के हाथों में। आप मेरी मौत का बीमा करना चाहते हैं, दस साल के अंदर मर जाओ तो पूरे पैसे मिलेंगे। क्यों साहब ? अगर इससे ज्यादा जीओ तो पैसे और ज्यादा देने पड़ते हैं। तो जिंदगी का बीमा करा लो, किसी के चरणों में बैठ जाओ ताकि जन्म मरण का खौफ न रहे। मगर नाम लेना ही काफी नहीं। जो पूंजी मिली है उसको दिनों दिन बढ़ाओ। "जो जीते जी पंडित है वह मर कर भी पंडित है। "हमारे हजूर फरमाया करते थे, "जो जीते जी अनपढ़ है मर कर पंडित नहीं हो जाएगा।" जीवनमुक्त संतों ने माना है। उनके चरणों में बैठो। मैं आप को मौलाना रूम का एक शेयर अर्ज करूँ। वह कहते हैं हमने एक बुत को देखा :

काबा मी गरदीद सरे कुवे यक बुते।

कि हमने देखा कि एक ऐसा बुत था जिसकी गली की वरली तरफ काबा भी परिक्रमा कर रहा था, खुदा का घर भी परिक्रमा कर रहा था। तो फरमाते हैं आखिर में, क्या कहते हैं:

या खुदा ईं चे बुत या बलाओ आफ़ते॥

यह कैसा बुत है या आफत या बला है जो खुदा का घर भी उसके गिर्दागिर्द परिक्रमा कर रहा है। यह अनुभवी पुरुषों की कहानी है। ❋